Shiv Sadhana Vidhi on Shivratri 12 August 2015

शिव साधना विधि श्रावणी शिवरात्री १२ अगस्त २०१५

Swami Sandipendra Ji
9425941129
contact@sandipendra.com
www.sandipendra.com

शिव की महिमा अनंत है। उनके रूप, रंग और गुण अनन्य हैं। समस्त सृष्टि शिवमयी है। सृष्टि से पूर्व शिव हैं और सृष्टि के विनाश के बाद केवल शिव ही शेष रहते हैं। ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मा ने सृष्टि की

रचना की, परंतु जब सृष्टि का विस्तार संभव न हुआ तब ब्रह्मा ने शिव का ध्यान किया और घोर तपस्या की। शिव अर्द्धनारीश्वर रूप में प्रकट हुए। उन्होंने अपने शरीर के अर्द्धभागसे शिवा (शक्ति या देवी) को अलग कर दिया। इस प्रकार सृष्टि की रचना के लिए शिव दो भागों में विभक्त हो गए, क्योंकि दो के बिना सृष्टि की रचना असंभव है। शिव पांच तरह के कार्य करते हैं जो ज्ञानमय हैं। सृष्टि की रचना करना, सृष्टि का भरण-पोषण करना, सृष्टि का विनाश करना, सृष्टि में परिवर्तनशीलतारखना और सृष्टि से मुक्ति प्रदान करना। सृष्टि के आरंभ और विनाश के समय रुद्र ही शेष रहते हैं। कहा जाता है कि सृष्टि के आदि में महाशिवरात्रि को मध्य रात्रि में शिव का ब्रह्म से रुद्र रूप में अवतरण हुआ, इसी दिन प्रलय के समय प्रदोष स्थिति में शिव ने ताण्डव नृत्य करते हुए संपूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से नष्ट कर दिया। इसीलिए महाशिवरात्रि अथवा काल रात्रि को पर्व के रूप में मनाने की प्रथा का प्रचलन है।

शिव को सहस्त्रमुखी यानी हजार मुंह वाला भी कहा गया है, लेकिन प्रमुखतया शिव पंचमुखी हैं। इन्हीं पांचों मुखों के जरिए शिव संसार को चलाते हैं। शिव की प्रिय संख्या है पांच। शिव मध्यमार्गी हैं। यानी न देवों के, न असुरों के। वह बीच के हैं, जो चाहे, वह प्राप्त कर ले। शून्यका विस्फोट हुआ, तो उससे नौ संख्याएं निकली-एक से नौ तक। पांच सबसे बीच की संख्या है। शिव पंचतत्व के देव हैं। इंद्रियां भी पांच होती हैं और शिव इंद्रियों के भी स्वामी हैं। शिव का प्रिय मंत्र है-नमः शिवाय।

इसमें भी पांच ही अक्षर हैं, इसीलिए इसे 'पंचाक्षर मंत्र' कहा जाता है। यदि इसमें ॐ भी जोड़ दिया जाये तो यह षडाक्षरी मंत्र ॐ नमः शिवाय बन जाता है जो और भी अधिक प्रभावशाली है।

१२ अगस्त २०१५ को श्रावणी शिवरात्री है। इस दिन भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र नमः शिवाय अथवा ॐ नमः शिवाय का रूद्राक्ष की माला पर अथवा मानसिक रूप से जप करना चाहिए। जितना अधिक आप का जप होगा उतनी अधिक आपके ऊपर भगवान शिव की कृपा होगी।

.....

ॐ नमः शिवाय

सम्पुर्ण जगत में भगवान शिव के समान कोई नही हैा उनकी उपासना से बढ़कर कोई उपसाना नही है एवं उनके मंत्रो से बढ़कर कोई मंत्र नही हैा मनुष्य योनि प्राप्त करना तभी सफल है जब यह भगवान शिव की सेवा एवं भक्ति में समर्पित हो जाये । भगवान शिव को प्रसन्न करना ही मनुष्य का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए । जिस व्यक्ति ने इस जन्म में भगवान शिव को प्रसन्न कर लिया, उसके लिए करने को कुछ शेष नही रह जाता ।

वैसे तो भगवान शिव को प्रसन्न करने की कोई विधि नही है क्योंकि वो अपने भक्तों पर कब और कैसे प्रसन्न हो जायें ये कोई नही जानता फिर भी गुरूओं के मुख से जो कुछ भी प्राप्त हुआ उसके अनुसार व्यक्ति को साधना करनी चाहिए ।

भगवान शिव का षडाक्षरी मंत्र सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वशक्तिशाली मंत्र हैा इस मंत्र के जप से आध्यात्मिक विकास होता है एवं अन्त में मोक्ष प्राप्ति होती हैा इस संसार के सभी ऐश्वर्य एवं भोग शिव साधक के आगे नतमस्तक रहते हैा कोई दुख अथवा कष्ट भगवान शिव के साधक को नही छू सकता । शिव योगी सदैव निरोगी रहता है एवं १०० वर्ष की आयु पूर्ण कर मोक्ष प्राप्त करता हैा

भगवान शिव के षडाक्षरी मन्त्र ‘ ऊँ नमः शिवाय ’ की सम्पूर्ण विधि साधको के हितार्थ यहां प्रस्तुत कर रहा हूँ -

आसन पर बैठकर सर्वप्रथम अपने गुरूदेव का ध्यान एवं पूजन करें, उसके पश्चात गणेश जी का ध्यान एवं पूजन करें । यह पूजन आप मानसिक रूप से भी करे सकते हैं इसके पश्चात भगवान शिव का ध्यान करें एवं धूप, दीप फल फूल आदि से पूजन करें । इसके पश्चात संकल्पानुसार जप करें।

इस मंत्र का 1,25,000 जप रूद्राक्ष की माला से करना है, जिसे आप 11,14 अथवा 21 दिन में कर सकते हैा इसके पश्चात दशांश होम, तर्पण, मार्जन करना चाहिए एवं ११ ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए ।

इस विधि से आपको जीवन भर अनुष्ठान करने हैं, एक अनुष्ठान करके रूक नही जाना है, लगातार करते रहना हैा आप देखना जीवन में कैसे आपको आनन्द मिलता हैा
जो लोग अनुष्ठान करने में सक्षम नही हैं वो नियमित रूप से 51 माला इस मंत्र की करें ।

शिव के साथ शक्ति की एवं शक्ति के साथ शिव की उपासना अवश्य होती हैा इसलिए अपने गुरूदेव से शक्ति मंत्र भी अवश्य प्राप्त करें एवं उसका यथासम्भव जप करें ।

मन्त्र – ऊँ नमः शिवाय

ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रवतंम् ।
रत्नाव्कल्पोज्जवलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।।
पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणै व्याघ्रकृत्तिं वसानम्।
विश्वाद्यं विश्ववबीजं निखिल भयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

सीधे हाथ में जल लेकर विनियोग करें –

विनियोग – अस्य मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्ति छन्द, ईशान देवता, ऊँ बीजाय, नमः शक्तये, शिवायेति कीलकाय, सदाशिव प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ वामदेवऋषये नमः शिरसि।

पंक्ति छन्दसे नमः मुखे ।

ईशान देवतायै नमः हृदि।

ॐ बीजाय नमः गुह्ये।

नमः शक्तये नमः पदयोः।

शिवायेति कीलकाय नमः नाभौ।

विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे

षडङ्गन्यास

ॐ ॐ अगुंष्ठाभ्यां नमः।

ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ मं मध्यामाभ्यां नमः।

ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ यं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास

ॐ ॐ हृदयाय नमः

ॐ नं शिरसे स्वाहा

ॐ मं शिखायै वषट्

ॐ शिं कवचाय हुम्।

ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट।

ॐ यं अस्त्राय फट्।

आज के युग में मनुष्य ऐसी साधनाओं की खोज में रहता है जो उसे तुरन्त फल प्रदान करें वह महामानव बनना चाहता है जिसके इशारे पर पूरा संसार चले, ऐसी सिद्धियां प्राप्त करना चाहता है जिनसे वह जब चाहे जिसको चाहे भस्म कर दे, जिसको चाहे वश में कर ले, सम्पूर्ण भविष्य का ज्ञान उसे हो जाये और पूरा संसार उसके आगे नतमस्तक रहे । ऐसी सिद्धियां पाने के लिए वो इधर उधर भटकता है। नये-नये गुरूओ के पास जाता है, नयी-नयी पुस्तकें खरीदता है। एक दो महीना नये मंत्र का जप करता है और जब कुछ हासिल नही होता तो फिर किसी नयी साधना को करना प्रारम्भ कर देता हैा इस तरह कई वर्ष बीत जाते हैं और कुछ हाथ नही आता ।

इस संसार के कुछ नियम होते हैं और उन्ही नियमों के तहत आपको फल प्राप्त होता है, केवल आपके चाहने से कुछ नही होता । सभी सिद्धियां भगवद कृपा से प्राप्त होती हैं इनके लिए आपको अलग से कुछ करने की आवश्यकता नही है। जो व्यक्ति सिद्धियों के पीछे भागता है उसे वो कभी प्राप्त नही होती और जिसका लक्ष्य परमात्म प्राप्ति है सभी सिद्धियां उसके आगे नतमस्तक रहती हैं यहां मेरा उद्देश्य आपको समझाना है कि कोई भी सिद्धि भगवद कृपा से ही मिलती हैा यदि यह मिलनी होगी तो आपको मिलकर ही रहेगी इसके लिए दर दर भटकने की और तुच्छ साधनाओं को करने की कोई आवश्यकता नही हैा उच्च कोटि की निष्काम साधना से सर्वप्रथम आपके जो पाप कर्म हैं उनका नाश होता है और आप जन्म-मरण के बंधनो से मुक्त हो जाते हैं सब कुछ आपको बिना चाहे ही मिल जायेगा । इसलिए मेरा आपको परामर्श है कि आप केवल उच्च कोटि की निष्काम उपासना ही करें जैसे शिव साधना एवं उनके विभिन्न अवतार, शक्ति

Pashupatastra Mantra Sadhna Evam Siddhi

पपशुपतास्त्र मंत्र साधना एवं सिद्धि

Swami Sandipendra Ji

9425941129

contact@sandipendra.com

www.sandipendra.com

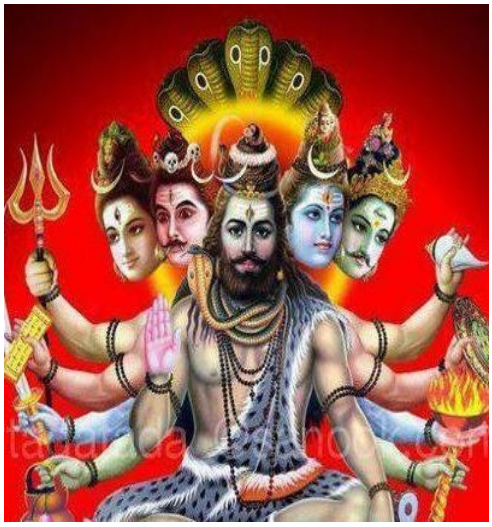

ब्रह्मांड में तीन अस्त्र सबसे बड़े हैं - पशुपतास्त्र, नारायणास्त्र एवं ब्रह्मास्त्र इनमें से यदि कोई एक भी अस्त्र मनुष्य को सिद्ध हो जाये तो उस व्यक्ति के सभी कष्ट समाप्त हो जाते हैं। लेकिन इनकी सिद्धि प्राप्त करना इतना सरल नही है। यदि आपमें कड़ी साधना करने का साहस नही है एवं धैर्य नही है तो ये साधना आपके लिए नही है।

मंत्र - ऊँ श्लीं पशु हुं फट्।

विनियोगः- ऊँ अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छंदः, पशुपतास्त्ररूप पशुपति देवता, सर्वत्र यशोविजय लाभार्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यासः -

ऊँ हुं फट् हृदयाय नमः।
श्लीं हुं फट् शिरसे स्वाहा।
पं हुं फट् शिखायै वषट्।
शुं हुं फट् कवचाय हुं।
हुं हुं फट् नेत्रत्रयाय वौषट्।
फट् हुं फट् अस्त्राय फट्।

ध्यान

मध्याह्नार्कसमप्रभं शशिधरं भीमाट्टहासोज्ज्वलम्
त्र्यक्षं पन्नगभूषणं शिखिशिखाश्मश्रु-स्फुरन्मूर्द्धजम् ।
हस्ताब्जैस्त्रिशिखं समुद्गरमसिं शक्तिादधानं विभुम्
दंष्ट्रभीम चतुर्मुखं पशुपतिं दिव्यास्त्ररूपं स्मरेत् ।।

विधि : सर्वप्रथम अपने गुरूदेव से इस मंत्र की दीक्षा प्राप्त करें। इस मंत्र का पुरश्चरण ६ लाख जप करने से होता है। उसका दशांश होम, उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन एवं उसका दशांश ब्राह्मण भोज होता

है।

इस मंत्र के साथ में पाशुपतास्त्र स्तोत्र का पाठ भी अवश्य करना चाहिए। इस पाशुपत-मंत्र की एक बार आवृति करने से ही यह मनुष्य सम्पूर्ण विघ्नों का नाश कर सकता है, सौ आवृतियों से समस्त उत्पातों को नष्ट कर सकता है।

इस मंत्र द्वारा घी और गुग्गुल के होम से मनुष्य असाध्य कार्यो को भी सिद्ध कर सकता है इस पाशुपतास्त्र-मंत्र के पाठमात्र से समस्त क्लेशो की शांति हो जाती है।

।। पाशुपतास्त्र स्तोत्रम्।।

ऊँ नमो भगवते महापाशुपतायातुलबलवीर्यपराक्रमाय त्रिपञ्चनयनाय नानारूपाय नानाप्रहरणोद्यताय सर्वाङ्गरक्ताय भिन्नाञ्जनचयप्रख्याय श्मशान वेतालप्रियाय सर्वविघ्ननिकृन्तन-रताय सर्वसिद्धिप्रदाय भक्तानुकम्पिने असंख्यवक्त्रभुजपादाय तस्मिन् सिद्धाय वेतालवित्रासिने शाकिनीक्षोभ जनकाय व्याधिनिग्रहकारिणे पापभंजनाय सूर्यसोमाग्निनेत्राय विष्णु-कवचाय खंगवज्रहस्ताय यमदण्डवरुणपाशाय रुद्रशूलाय ज्वलज्जिह्वाय सर्वरोगविद्रावणाय ग्रहनिग्रहकारिणे दुष्टनागक्षय-कारिणे।

ऊं कृष्णपिंगलाय फट्। हूंकारास्त्राय फट्। वज्र-हस्ताय फट्। शक्तये फट्। दण्डाय फट्। यमाय फट्। खड्गाय फट्। नैर्ऋताय फट्। वरुणाय फट्। वज्राय फट्। ध्वजाय फट्। अंकुशाय फट्। गदायै फट्। कुबेराय फट्।

Swami Sandipendra Ji
9425941129
contact@sandipendra.com
www.sandipendra.com

त्रिशूलाय फट्। मुद्गराय फट्। चक्राय फट्। पद्माय फट्। नागास्त्राय फट्। ईशानाय फट्। खेटकास्त्राय फट्। मुण्डाय फट। मुण्डास्त्राय फट्। कंकालास्त्राय फट्। पिच्छिकास्त्राय फट्। क्षुरिकास्त्राय फट्। ब्रह्मास्त्राय फट्। शक्त्यस्त्राय फट्। गणास्त्राय फट्। सिद्धास्त्राय फट्। पिलिपिच्छास्त्राय फट्। गन्धर्वास्त्राय फट्। पूर्वास्त्रायै फट्। दक्षिणास्त्राय फट। वामास्त्राय फट्। पश्चिमास्त्राय फट्। मंत्रास्त्राय फट्। शाकिन्यास्त्राय फट्। योगिन्यस्त्राय फट्। दण्डास्त्राय फट्। महादण्डास्त्राय फट्। नमोअस्त्राय फट्। सद्योजातास्त्राय फट्। हृदयास्त्राय फट्। महास्त्राय फट्। गरुडास्त्राय फट्। राक्षसास्त्राय फट्। दानवास्त्राय फट्। क्षौ नरसिंहास्त्राय फट्। त्वष्ट्रस्त्राय फट्। सर्वास्त्राय फट्। नः फट्। वः फट्। पः फट्। फः फट्। मः फट्। श्रीः फट्। पेः फट्। भुः फट्। भुवः फट्। स्वः फट्। महः फट्। जनः फट्। तपः फट्। सत्यं फट्। सर्वलोक फट्। सर्वपाताल फट्। सर्वतत्व फट्। सर्वप्राण फट्। सर्वनाडी फट्। सर्वकारण फट्। सर्वदेव फट्। ह्रीं फट्। श्रीं फट्। डूं फट्। स्त्रुं फट्। स्वां फट्। लां फट्। वैराग्याय फट्। मायास्त्राय फट्। कामास्त्राय फट्। क्षेत्रपालास्त्राय फट्। हुंकरास्त्राय फट्। भास्करास्त्राय फट्। चन्द्रास्त्राय फट्। विघ्नेश्वरास्त्राय फट्। गौः गां फट्। स्त्रों स्त्रौं फट्। हौं हों फट्। भ्रामय भ्रामय फट्। संतापय संतापय फट्। छादय छादय फट्। उन्मूलय उन्मूलय फट्। त्रासय त्रासय फट्। संजीवय संजीवय फट्। विद्रावय विद्रावय फट्। सर्वदुरितं नाशय नाशय फट्।

Swami Sandipendra Ji
9425941129
contact@sandipendra.com

www.sandipendra.com

ॐ Aghorastra Mantra Sadhna Vidhi in Hindi & Sanskrit ॐ

ॐ अघोरास्त्र मन्त्र एवं प्रयोग ॐ

Swami Sandipendra Ji

9425941129
contact@sandipendra.com

www.sandipendra.com

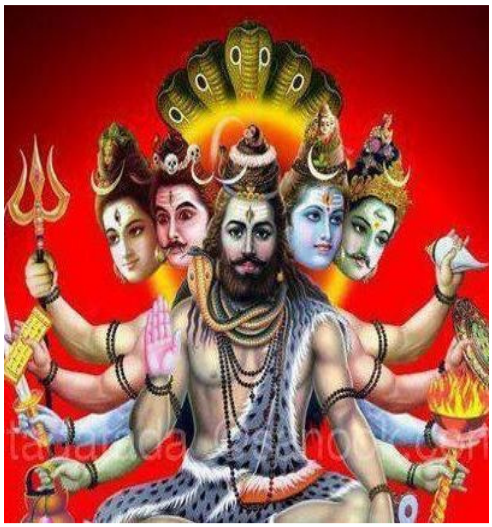

अघोरास्त्र मंत्र के स्मरण मात्र से मनुष्यों के सारे उपद्रव नष्ट हो जाते हैं। अघोरास्त्र मंत्र का जप महामारी, राजकीय उपद्रव, प्रेत बाधा, शत्रु बाधा, ग्रह दोष, असामयिक गर्भपात शान्ति हेतु किया जाता है।

महादेव स्कन्द जी से कहते हैं - अब मैं समस्त उत्पातों का नाश करने वाली अस्त्र शान्ति का वर्णन करूगाँ। यह शान्ति ग्रहरोग आदि को

शान्त करने वाली तथा महामारी एवं शत्रु का मर्दन करने वाली है। विघ्न कारक गणों के द्वारा उत्पादित उत्पात को भी शान्त करती है। मनुष्य अघोरास्त्र का जप करे। एक लाख जप करने से ग्रहबाधा आदि का निवारण होता है और तिल से दशांश होम कर दिया जाये तो उत्पातों का नाश होता है। एक लाख जप-होम से दिव्य उत्पात का तथा आधे लक्ष जप-होम से आकाशज उत्पात का नाश होता है। घी की एक लाख आहुति देने से भूमिज उत्पात के निवारण में सफलता प्राप्त होती है। घृत मिश्रित गुग्गुल के होम से सम्पूर्ण उत्पात आदि का शमन होता है। दूर्वा, अक्षत तथा घी की आहुति देने से सारे रोग दूर होते हैं। केवल घी की एक सहस्र आहुति से बुरे स्वप्न नष्ट हो जाते हैं, इसमें संशय नही है। वही आहुति यदि दस हजार की संख्या में दी जाय तो ग्रहदोष का शमन होता है। घृत मिश्रित जौं की दस हजार आहुतियों से विनायक जनित पीड़ा का निवारण होता है। दस हजार घी की आहुतियों से तथा गुग्गुल की भी दस हजार आहुतियों से भूत-वेताल आदि की शान्ति होती है। वृक्ष आंधी आदि से स्वतः उखड़कर गिर जाय, घर में सर्प का कंकाल हो तथा वन में प्रवेश करना पड़े तो दूर्वा, घी और अक्षत के होम से विघ्न की शान्ति होती है। उल्कापात या भूकम्प हो तो तिल और घी से होम करने से कल्याण होता है। वृक्षों से रक्त बहे, असमय में फल-फूल लगें, राष्ट्रभंग हो, मारणकर्म हो, जब मनुष्य-पशु आदि के लिए महामारी आ जाय तो तिल मिश्रित घी से अर्धलक्ष आहुति देनी चाहिये ।

जहाँ असमय में गर्भपात हो या जहाँ बालक जन्म लेते ही मर जाता हो तथा जिस घर में विकृत अंग वाले शिशु उत्पन्न होते हों तथा जहाँ समय पूर्ण हाने से पूर्व ही बालक का जन्म होता हो, वहाँ इन सब दोषों के

शमन के लिए दस हजार आहुतियां देनी चाहिये। सिद्धि साधन में तिल मिश्रित घी से एक लाख हवन किया जाय तो वह उत्तम है, मध्यम सिद्धि के साधन में अर्धलक्ष और अधम सिद्धि के लिए पचीस हजार आहुति देनी चाहिये। जैसा जप हो , उसके अनुसार ही होम होना चाहिये। इससे संग्राम में विजय प्राप्त होती हैा न्यासपूर्वक तेजस्वी पंचमुख का ध्यान करके 'अघोरास्त्र' का जप करना चाहिये।

विधि – सर्वप्रथम अपने गुरूदेव से इस मंत्र की दीक्षा लें। जो व्यक्ति बिना गुरूमुख से मंत्र लिए केवल पुस्तकों से पढकर मंत्र जप करता है वह घोर नरक का अधिकारी होता है एवं करोड़ो जप करने पश्चात भी उसे सिद्धि नही मिलती। यह विद्या बहुत ही उग्र है इसलिए योग्य गुरू के सान्निध्य में ही प्रारम्भ करें ।

प्रारम्भिक पूजा करने के पश्चात् भगवान शिव के पंचमुखो का निम्नलिखित मंत्रो से पूजन एवं ध्यान करना चाहिये।

ईशान (ईशान दिशा)

यह क्रीड़ा का मुख है। जितने भी मनोरंजन, खेल, विज्ञान आदि हैं, ये सभी शिव के इसी मुख द्वारा संचालित होते हैं।

पूजन मंत्र : ॐ ईशानाय नमः । ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रृह्माधिपतिर्ब्रह्मणोअधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।

Swami Sandipendra Ji
9425941129
contact@sandipendra.com
www.sandipendra.com

तत्पुरूष (पूर्व दिशा)

यह मुख पूर्व दिशा की ओर हैा यह तपस्या का मुख है। साधना, पढ़ाई-लिखाई, इच्छा व लक्ष्य प्राप्ति के लिए किया जाने वाला प्रत्येक कार्य इसी मुख से संचालित होता है।

पूजन मंत्र : ॐ तत्पुरूषाय नमः । ॐ तत्पुरूषाय विदमूहे महादेवाय धीमहि तन्नो रूद्रः प्रचोदयात् ।

अघोर (दक्षिण दिशा)

यह शिव का रौद्रमुख है। संसार में जो युद्ध, आपदाएं, मृत्यु आती हैं, वो सभी शिव के इसी मुख से संचालित होता है। यह न्याय भी करता है और पाप का दंड भी देता है। आपदाशांति के लिए अघोर-उपासना इसीलिए की जाती है। यह शिव का मध्यमुख है।

पूजन मंत्र : ॐ अघोराय नमः। ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यः सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रूद्ररूपेभ्यः ।

वामदेव (पश्चिम दिशा)

यह अंहकार का रूप है। हमारे अहंकार, गर्व, प्रेम, मोह, आसक्ति आदि इसी मुख के कारण इस संसार में दिखते हैं।

Swami Sandipendra Ji
9425941129
contact@sandipendra.com
www.sandipendra.com

पूजन मंत्र : ॐ वामदेवाय नमः। ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रूद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बालाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ।

सद्योजात (उत्तर दिशा)

यह ज्ञान का मुख है। यह शिव का अतिशालीन रूप है। शिव के इसी रूप की सबसे ज्यादा आराधना होती है।

पूजन मंत्र : ॐ सद्योजाताय नमः। ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमो भवे भवे नातिभवे भवस्य मां भवोद्भवाय ।

सीधे हाथ में जल लेकर विनयोग करें -

विनियोग : ऊँ अस्य श्री अघोरास्त्र मंत्रस्य, अघोर ऋषिः, त्रिष्टुप् छंदः अघोर रुद्रदेवता, ह ल बीजं, स्वराः शक्तिं। सर्वोपद्रव शमनार्थे जपे विनियोगः।

करन्यासः

ह्रीं स्फुर स्फुर अंगुष्ठाभ्याम् नमः
प्रस्फुर प्रस्फुर तर्जनीभ्याम् नमः
घोर घोर-तर तनुरूप मध्यमाभ्याम् नमः
चट चट प्रचट प्रचट अनामिकाभ्याम् नमः

Swami Sandipendra Ji
9425941129
contact@sandipendra.com
www.sandipendra.com

कह कह वम वम कनिष्ठिकाभ्याम् नमः
बंध बंध घातय घातय हुँफट् करतलकरपृष्ठाभ्यां

षडङ्गन्यासः-

ह्रीं स्फुर स्फुर हृदयाय नमः
प्रस्फुर प्रस्फुर शिरसे स्वाहा
घोर घोर-तर तनुरूप शिखायै वषट्
चट चट प्रचट प्रचट कवचाय हुँ
कह कह वम वम नेत्रत्रयाय वौषट्
बंध बंध घातय घातय हुँफट् नमःअस्त्राय फट्

न्यास करने के पश्चात् भगवान शिव का ध्यान करें -

ध्यानम्

सजल घनसमाभं भीम दंष्ट्रं त्रिनेत्रं
भुजगधरमघोरं ह्यरक्त वस्त्राङ्ग रागाम्।
परशु डमरू खडगान् खेटकं वाण चापौ
त्रिशिखि नर कपाले विभ्रतं भावयामि।।
अभिचारे ग्रहध्वंसे कृष्णवर्णो भवेद्विभुः
वश्ये कुसुम्भसङ्काशो मुक्तौ चन्द्रसमप्रभः

जल युक्त बादल के समान जिनके शरीर की कान्ति हैं, जिनकी दंष्ट्रा अत्यन्त

भयानक है जो तीन नेत्रों से युक्त तथा साँपों को धारण करने वाले हैं - ऐसे रक्त वस्त्र एवं रक्त अङ्गराग से भूषित परशु, डमरू, खड्ग, खेटक, बाण, चाप, त्रिशुल तथा नर कपाल को धारण करने वाले अघोर का मैं ध्यान करता हूँ

ये अघोर प्रभु , मारण तथा ग्रहों के विनाश काल में कृष्ण वर्ण और वश्यकार्य में कुसुम्भ के सदृश तथा मुक्ति कार्य में चन्द्रमा के समान रूप धारण करते हैं।

शारदा तिलक तन्त्र के अनुसार अघोर मंत्र का एक लक्ष जप करके दशांश होम करें। साधक रात्रि में, अपामार्ग समिध तिल सरसों एवं पायस से अयुत होम या सहस्त्राहुति देवे तो कृत्या व भूतों का नाश होता हैं।

अघोरास्त्र मंत्र के साथ में नियमित रूप से शिव गायत्री एवं शक्ति मंत्र का जप करना चाहिये । उत्तम फल प्राप्ति के लिए प्रतिदिन शिवलिंग पर जल चढाना चाहिये एवं नीलकण्ठ अघोरास्त्र स्तोत्र का पाठ करना चाहिये।

।। श्रीनीलकण्ठ अघोरास्त्र स्तोत्रं।।

विनियोगः- ऊँ अस्य श्री भगवान नीलकण्ठ सदा-शिव-स्तोत्र मंत्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्ठप् छन्दः , श्रीनील-कण्ठ सदाशिवो देवता ब्रह्म बीजं, पार्वती शक्तिः , मम समस्त-पाप-क्षयार्थं क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थ मोक्षादि-चतुर्वर्ग-साधनार्थ च श्रीनील-कण्ठ-सदा-शिव-प्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

Swami Sandipendra Ji
9425941129
contact@sandipendra.com
www.sandipendra.com

ऋष्यादिन्यासः -

श्री ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि।

अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे।

श्रीनीलकण्ठ सदाशिव देवतायै नमः ह्रदि।

ब्रह्म-बीजाय नमः लिङ्गे।

पार्वती-शक्त्यै नमः नाभौ।

मम समस्त पापक्षयार्थ क्षेमस्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं मोक्षादि चतुर्वर्ग साधनार्थं च श्रीनीलकण्ठ सदाशिव प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

।। स्तोत्रम् ।।

ऊँ नमो नीलकण्ठाय, श्वेतशरीराय, सर्पालंकारभूषिताय, भुजङ्गपरिकराय, नागयज्ञोपवीताय, अनेकमृत्यु विनाशाय नमः। युग युगान्त कालप्रलय-प्रचण्डाय, प्रज्वाल-मुखाय नमः। दंष्ट्राकराल घोररूपाय हूं हूं फट् स्वाहा। ज्वालामुखाय मंत्र करालाय, प्रचण्डार्क सहस्त्रांशु-चण्डाय नमः। कर्पूर मोद-परिमलाङ्गाय नमः। ऊँ ईं ईं नील महानील वज्र वैलक्ष्य मणि-माणिक्य मुकुट भूषणाय, हन-हन-हन-दहन-दहनाय श्रीअघोरास्त्र मूल मंत्र-ऊँ ह्रां ऊँ ह्रीं ऊँ ह्रूं स्फुर अघोर-रूपाय रथ रथ तंत्र-तंत्र-चट्-चट्-कह-कह-मद-मद-दहन-दाहनाय श्री अघोरास्त्र-मूल-मंत्र-जरा-मरण-भय-हूं-हूं फट्

Swami Sandipendra Ji
9425941129
contact@sandipendra.com
www.sandipendra.com

स्वाहा।

अनन्ताघोर-ज्वर-मरण-भव-क्षय-कुष्ठ-व्याधि-विनाशाय, शाकिनी-डाकिनी-ब्रह्मराक्षस-दैत्य-दानव-बन्धनाय, अपस्मार-भूत-बैताल-डाकिनी-शाकिनी-सर्व-ग्रह-विनाशाय, मंत्र-कोटि-प्रकटाय, पर-विद्योच्छेदनाय, हूं हूं फट् स्वाहा। आत्म-मंत्र संरक्षणाय नमः।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रीं नमो भूत-डामरी-ज्वाल-वश-भूतानां-द्वादश-भूतानां त्रयोदश-षोडश-प्रेतानां पञ्च-दश-डाकिनी-शाकिनीनां हन हन। दहन-दार-नाथ! एकाहिक-द्वयाहिक-त्र्याहिक-चातुर्थिक-पञ्चाहिक-व्याघ्र-पादान्त-वातादि-वात-सरिक-कफ-पित्तक-काश-श्वास-श्लेष्मादिकं दह-दह, छिन्धि-छिन्धि, श्रीमहादेव-निर्मित-स्तंभन-मोहन-वश्याकर्षणोच्चाटन-कीलनोद्वेषण-इति षट्-कर्माणि वृत्य हूं हूं फट् स्वाहा।

वात ज्वर, मरण-भय, छिन्न-छिन्न नेह नेह भूतज्वर, प्रेतज्वर, पिशाचज्वर, रात्रिज्वर, शीतज्वर, तापज्वर, बालज्वर, कुमारज्वर, अमितज्वर, दहनज्वर, ब्रह्मज्वर, विष्णुज्वर, रुद्रज्वर, मारीज्वर, प्रवेशज्वर, कामादि-विषम ज्वर, मारी-ज्वर, प्रचण्ड-घराय, प्रमथेश्वर! शीघ्रं हूं हूं फट् स्वाहा। ऊँ नमो नीलकण्ठाय, दक्षज्वर-ध्वंसनाय, श्रीनीलकण्ठाय नमः।

फलश्रुति

सप्तवारं पठेत् स्तोत्रं, मनसा चिन्तितं जपेत्।
तत्सर्वं सफलं प्राप्तं, शिवलोकं स गच्छति।।